वाद्य शास्त्र

पी० बोर्ड, प्रयाग संगीत समिति, इंटरमीडियेट, बी०ए०, सीनियर
डिप्लोमा तथा गांधर्व मन्डल बम्बई, पंजाब यूनीवर्सिटी,
राजस्थान, जोधपुर, जम्मू और काश्मीर विश्वविद्यालयों
द्वारा स्वीकृत पाठ्यक्रमानुसार)

784.1SR V
VADHYA SHASTAR
21251

प्रो० हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
एम० ए०, (गायन व दर्शन शास्त्र) एल० टी०, संगीत आचार्य,
संगीत प्रवीण, भू० पू० अध्यक्ष, शास्त्र विभाग,
प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद

Manohar Memorial College
LIBRARY
Accession 21251
FATEHABAD (Hisar)

प्राप्ति स्थान
संगीत सदन प्रकाशन
८८ साउथ मलाका, इलाहाबाद
दूरभाष : ५४६७३

न संस्करण मार्च ८६

21251

संगीत सदन प्रकाशन
संशोधित मू० १५/-

विषय-सूची

प्रथम अध्याय

यू० पी० बोर्ड तथा प्रयाग संगीत समिति का पाठ्यक्रम ... १०
वाद्य और उनके प्रकार ... १७
तानपुरा परिचय ... २१
तानपुरे के तार ... २१
तानपुरे के अंग ... २१
मूल और सहायक नाद ... २५
सा, म, प के सहायक नाद ... २६

द्वितीय अध्याय

तबला परिचय ... ३१
दाहिना तबला के अंग ... ३१
बायां के अंग ... ३३
तबला मिलाने की विधि ... ३३
तबला के वर्ण और उन्हें निकालने की विधि ... ३४
केवल दाहिने पर निकलने वाले वर्ण ... ३५
केवल बायें पर निकलने वाले वर्ण ... ३६
दोनों हाथों से बजने वाले वर्ण ... ३६
ताल और उसके दस प्राण ... ३७
काल, मार्ग और क्रिया ... ३८
अंग, ग्रह—सम, विषम, अतीत और अनागत ... ३९
जाति, कला ... ४०
लय, यति, प्रस्तार ... ४१
लयकारी और उसे लिखने की विधि ... ४२
विभिन्न लयकारियों का प्रारम्भिक स्थान निकालना ४५

Scanned by TapScanner

कुछ तालों के ठेके ... ४७
तीनताल, झपताल, एकताल, चारताल, दादरा ... ४७
कहरवा, धुमाली और रूपक ... ४८
तीवरा, शूल, कव्वाली, खेमटा और झूमरा ... ४९
दीपचन्दी, आड़ाचारताल, धमार और तिलवाड़ा ... ५०
अद्धा, जत, टप्पा ताल, पंजाबी ... ५१
फरोदस्त, रुद्र ताल, कुम्भ, पश्तो ... ५२
गजझम्पा, पंचम सवारी, बड़ी सवारी और शिखर ५३
मत्त ताल, लक्ष्मी, सरस्वती, ब्रह्म, गणेश और बसन्त ताल ५४
कुछ पारिभाषिक शब्द ... ५६
लय और मात्रा ... ५६
ताल और विभाग ... ५७
सम, ताली, खाली, बोल और टुकड़ा ... ५८
ठेका, आवृत्ति और सगत ... ५९
किस्म, तिहाई, मुखड़ा और मोहरा ... ६०
कायदा और उसके लक्षण, पलटा ... ६१
गत और गत के प्रकार ... ६२
गत कायदा, तिपल्ली, चौपल्ली, चक्करदार, गत, परन ६३
लग्गी, उठान, बाँट, पेशकारा ... ६४
चलन अथवा चाला, लड़ी ... ६५
... ६५
तबले का जन्म ... ६८
तबला के घराने और उनकी विशेषतायें ... ६९
दिल्ली घराने का परिचय और उदाहरण ... ७०
अजराड़ा ,, ,, ,, ... ७१
लखनऊ ,, ,, ,, ... ७३
फरुखाबाद ,, ,, ,, ... ७४
बनारस ,, ,, ,, ... ७६
पंजाब ,, ,, ,, ...

Scanned by TapScanner

कर्नाटक ताल पद्धति ... ७८
उत्तरी तालों को कर्नाटक पद्धति में लिखना ... ८०
कर्नाटक तालों को उत्तरी पद्धति में लिखना ... ८१

तृतीय अध्याय

बेला परिचय ... ८२
बेला के अंग ... ८२
बेला बजाने की बैठक ... ८७
बेला के तार और उनके स्वर ... ८८
बेला का जन्म और विकास ... ८९
बेला बजाने की शैलियां ... ९२
गायन–शैली ... ९२
गत-शैली ... ९३
बेला का उपयोग ... ९५

चतुर्थ अध्याय

सितार परिचय ... ९९
सितार के तार, सितार के अंग ... ९९
सितार की बैठक ... १०२
सितार के बोल और उन्हें निकालने की विधि ... १०४
कुछ पारिभाषिक शब्द ... १०५
ठाट—अचल और चल ... १०५
बोल–आकर्ष और अपकर्ष ... १०६
गत और उसके प्रकार, मसीतखानी ... १०६
रजाखानी, जमजमा ... १०७
झाला, मींड और सूत ... १०८
जोड़ ... १०९
घसीट, प्रकार, तोड़ा और लाग-डाट ... ११०

Scanned by TapScanner

तारपरन, लड़न्त, लड़ी, गुत्थी और लड़गुथाव ... १११
छूट, कृन्तन, कस्बी, अताई और गमक ... ११२
ार का संक्षिप्त इतिहास ... ११२
ार के घराने ... ११५

पंचम अध्याय

ात का संक्षिप्त इतिहास ... ११८
प्राचीन काल ... ११८
मध्य काल ... ११९
आधुनिक काल ... १२२

षष्टम अध्याय

गु दिगम्बर पलुस्कर (जीवनी और योगदान) ... १२५
णु नारायण भातखंडे ... १२८
ोर खुसरो ... १३०
ासेन ... १३२
रंगदेव ... १३५
ाल नायक ... १३६
मी हरिदास ... १३७

सप्तम अध्याय

रिभाषिक शब्द
संगीत और संगीत पद्धतियाँ ... १४०
नाद और उसकी विशेषतायें ... १४१
श्रुति ... १४२
शुद्ध स्वर ... १४३
विकृत स्वर ... १४४
आरोह-अवरोह, सप्तक और उसके प्रकार ... १४५
पकड़ और वक्र स्वर ... १४६
आलाप और उसके प्रकार ... १४७

Scanned by TapScanner

तान, कम्पन, मींड और गमक ... १४८
वादी, संवादी, अनुवादी ... १४९
विवादी, अंश और न्यास ... १५१
अल्पत्व-बहुत्व ... १५२
तानों के प्रकार ... १५३
शुद्ध स्वरों की आंदोलन संख्या ... १५५
खुले तार पर शुद्ध स्वरों की स्थापना ... १५६
पूर्व और उत्तर राग ... १५८
श्रीनिवास तथा भातखन्डे के स्वरों की तुलना ... १६०
परमेल प्रवेशक, आश्रय राग ... १६१

आठवां अध्याय

राग और समय ... १६२
अध्वदर्शक स्वर का महत्व ... १६२
वादी-सम्वादी स्वर का महत्व ... १६३
पूर्वाङ्ग और उत्तरांग का महत्व ... १६४
रेध कोमल, रेध शुद्ध और ग कोमल वाले राग ... १६४
रागों का समय चक्र ... १६८

नवां अध्याय

वेङ्कटमखी के ७२ थाट ... १७०
,, के थाट की विशेषतायें ... १७०
,, के स्वरों की ,, ... १७१
,, की थाट रचना विधि ... १७१
एक थाट से ४८४ रागों की उत्पत्ति ... १७४
उत्तर भारतीय सप्तक से थाट रचना ... १७६
आधुनिक थाटों के कर्नाटकी नाम ... १८०
राग-रागिनी वर्गीकरण ... १८१
उत्तरी और दक्षिणी स्वर ... १८२

Scanned by TapScanner

बाईस श्रुतियों में स्वरों के स्थान ... १८४
प्राचीन और आधुनिक स्वर स्थानों में अन्तर ... १८५

दसवां अध्याय

छत्तीस रागों का संक्षिप्त परिचय ... १८७
राग यमन और खमाज ... १८७
राग अल्हैया बिलावल और भूपाली ... १८८
राग भैरव और भैरवी ... १८९
राग बागेश्वरी और राग काफी ... १९०
राग भीमपलासी और राग बिहाग ... १९१
राग आसावरी और देश ... १९२
राग पीलू ... १९३
राग वृन्दावनी सारंग और केदार ... १९४
राग हमीर और राग मालकोश ... १९५
जौनपुरी और राग बहार ... १९६
गौड़ सारंग और राग तिलक कामोद ... १९७
राग मारवा और पूर्वी ... १९८
राग दुर्गा और देशकार ... १९९
राग शंकरा और तिलंग ... २००
राग कालिंगड़ा और पटदीप ... २०१
राग जैजैवन्ती और सोहनी ... २०२
राग कामोद ... २०३
राग मुलतानी ... २०४

Scanned by TapScanner